कविता

मनीष श्रीवास्तव

कुलसचिव (कार्यवाहक)
गुरु घासीदास विश्वविद्यालय
बिलासपुर, छत्तीसगढ़

फेर उही....

फेर उही 18 जून ।
न चैन न शुकुन ।।
फेर उही घण्टी ।
बबली अऊ बण्टी ।।
लईका मन के रांव रांवकांव कांव।
पहिली ले पांचवी, कोन कक्षा जांव।।
फेर समन्वयक के अवई जवई ।
नानम् परकार के पत्रक भरवई ।।
उही मूत्रालय, उही शौचालय पयखाना ।
फोटो खींच खींच के साहेब मन ल बताना ।।
मनटोरा भउजी चाऊंर ल देवत हे फुन ।
न चैन न शुकुन ।
फेर उही 18 जून ।।
फेर रेडियो,टी बी के लफड़ा ।
उही थारी, टिमटिमी अऊ दफ़ड़ा ।।
फेर उही परशिक्षन ।
साहेब मन के निरीक्षण ।।
फेर कुरता पैंठ के छटई ।
नम्बर हिसाब से बंटई।।
फेर अब पनही आही काहत हे ।
भगवान जाने सरकार, काय चाहत हे ।।
तहुँ मोरे कस गुन ।
न चैन न शुकुन ।
फेर उही 18 जून।।
फेर दरुहा ह स्कुल म लऊ ठी पटकही ।
देखबे, ओकर बोटर्रा आंखी भारी छटकही ।।
चिपरा सारे धोवाय नई राहय ।
गऊकिन,गुरु जी कतेक ल साहय ।।
फेर उही मध्यान्ह भोजन ।
लईका मन ल कहां कहां खोजन।।
मध्यान्ह भोजन म कीरा कहूँ परगे ।
गऊकिन ददा, परधान पाठक मरगे ।।
कतेक काहय, कतेक लिखय, अभी अतके ल सुन ।
न चैन न शुकुन ।
फेर उही 18 जून।।
जय जोहार संगवारी हो...।